Tender Heart High School, Sector - 33-B, Chandigarh.

कक्षा - नौवीं

विषय - हिन्दी साहित्य
शिक्षिका - श्रीमती कल्पना शर्मा

पुस्तक : साहित्य सागर

पाठ - 3 'महायज्ञ का पुरस्कार' (कहानी) लेखक - यशपाल

सुप्रभात प्यारे बच्चो!

आज हम कक्षा नौवीं की हिन्दी साहित्य की पाठ्य-पुस्तक साहित्य सागर की पृष्ठ संख्या - 14 पर दिए पाठ - 3 'महायज्ञ का पुरस्कार' नामक कहानी के शेष भाग का अध्ययन करेंगे।

बच्चो! आज हम महायज्ञ का पुरस्कार' कहानी के शेष भाग को पढ़ने एवं समझने जा रहे हैं इसलिए आप सभी अपनी - अपनी पुस्तक एवं उत्तर-पुस्तिका निकाल लें और पढ़ने के लिए तैयार हो जाएँ। पाठ को पढ़ाते एवं समझाते समय आपसे कुछ प्रश्न भी पूछे जाएँगे। उन प्रश्नों के उत्तर आप तभी दे पाओगे यदि आप अपना ध्यान इस ओर ही केन्द्रित रखोगे। आशा करती हूँ कि अब आप पढ़ने के लिए पूरी तरह से तैयार हैं।

बच्चो! कहानी को आगे बढ़ाने से पहले आइए, पहले यह जान लेते हैं कि पीछे हमने क्या पढ़ा एवं समझा था। 'महायज्ञ का पुरस्कार' कहानी में लेखक ने यह स्पष्ट किया है कि नर-सेवा ही नारायण सेवा है तथा जीवों के कष्टों के निवारण से ही प्रभु प्रसन्न होते हैं। एक सेठ बहुत विनम्र उदार तथा धर्मपरायण थे। उनके द्वार से कभी कोई याचक खाली हाथ नहीं लौटता था,

परन्तु एक समय ऐसा आया जब वे बहुत निर्धन हो गए। उन दिनों यज्ञों के फल को खरीदने - बेचने का प्रचलन था। एक दिन गरीबी से तंग आकर सेठानी ने उन्हें एक यज्ञ को बेचने की सलाह दी। यह सुनकर सेठ दुःखी हुए परन्तु विवश होकर अपना एक यज्ञ बेचने को तैयार हो गए। सेठ जी के यहाँ से दस - बारह कोस की दूरी पर एक नगर था, जिसका नाम था कुंदनपुर। वहाँ एक धन्ना सेठ रहते थे। उनकी पत्नी कोई दैवी शक्ति प्राप्त होने के कारण तीनों लोकों की बात जान लेती थी। उन्हीं धन्ना सेठ के हाथों अपना एक यज्ञ बेचने का निश्चय कर सेठ चल दिए। सेठानी ने रास्ते में खाने के लिए चार रोटियाँ भी उनके लिए बाँध दी। आधा रास्ता पार कर लेने के बाद सेठ ने एक पेड़ के नीचे रुककर भोजन और विश्राम करने की सोची। कुछ दूरी पर उन्हें भूख से छटपटाता एक कुत्ता दिखाई दिया। सेठ ने उस कुत्ते पर दया करके चारों रोटियाँ उसे खिला दीं और स्वयं एक लोटा जल पीकर ही रह गए। धन्ना सेठ के यहाँ पहुँचने पर सेठ ने उन्हें अपनी व्यथा सुनाई और उनसे एक यज्ञ खरीदने का आग्रह किया लेकिन धन्ना सेठ की पत्नी ने उनसे कहा कि आपने जो महायज्ञ आज किया है यदि आप उसे बेचोगे तो हम खरीद लेंगे। पहले तो सेठ को लगा कि ऐसा कहकर सेठानी उनका मज़ाक उड़ा रही हैं, उन्होंने तो बरसों से कोई यज्ञ नहीं किया है। सेठानी ने सेठ को समझाया कि आज रास्ते में स्वयं भूखे रहकर एक भूखे कुत्ते को अपनी चारों रोटियाँ खिलाकर आपने महायज्ञ किया है। सेठ ने किसी भूखे को अन्न देना अपना कर्त्तव्य माना इसलिए वे चुपचाप अपनी पोटली उठाकर वहाँ से चल दिए।

बच्चो! अब कहानी को आगे बढ़ाते हुए पृष्ठ संख्या सत्रह से कहानी को विस्तार से समझने का प्रयास करते हैं। अगले दिन शाम के समय सेठ अपने घर आ पहुँचे। सेठानी आशाएँ लगाए बैठी थीं। सेठ जी को खाली हाथ वापस लौटे

देखकर सेठानी आशंका से काँप उठी। उसे आशा थी कि धन्ना सेठ ने अवश्य ही एक न एक यज्ञ खरीदा होगा। अब उनके पास धन आ जाएगा और उनके दिन फिर से सुखपूर्वक कटने लगेंगे। लेकिन सेठ को खाली हाथ वापस आए देख सेठानी इस शंका से भर उठी कि ज़रूर धन्ना सेठ नहीं मिले इसलिए अपना कोई एक यज्ञ उनके हाथ बेच नहीं पाए फिर सेठ ने सेठानी को आरंभ से लेकर अंत तक की पूरी घटना सुना दी। सेठ ने बताया कि रास्ते में एक कुत्ते को भूख से व्याकुल देखकर उसने एक-के-बाद-एक अपनी चारों रोटियाँ खिला दीं। और स्वयं पानी पीकर रह गया। जब धन्ना सेठ के घर पहुँचा तो उनकी पत्नी को अपनी दैवी शक्ति से मेरे इस पुण्य कर्म की जानकारी हो गई और उन्होंने मेरे द्वारा किए गए इस कार्य को 'महायज्ञ' कहा और इसे खरीदना चाहा। किन्तु मैंने तो इस कार्य को अपना कर्तव्य मानकर किया था। मेरी दृष्टि में भूखे को अन्न देना तो मानव का कर्तव्य होता है, इसमें यज्ञ जैसी कोई बात नहीं। अतः मुझे इस मानवोचित कर्तव्य का मूल्य लेना उचित नहीं लगा और मैं लौट आया।

इस पूरी घटना को सुनकर सेठानी की सारी वेदना जाने कहाँ विलीन हो गई। हृदय उल्लास से भर उठा। वह सोचने लगी कि मेरे पति धन्य हैं। वह सेठ के चरणों की धूल अपने माथे पर लगाते हुए बोली कि धीरज रखें, भगवान सब भला करेंगे क्योंकि सेठानी को विश्वास था कि अच्छे दिन फिर से लौट आएँगे।

बच्चो! अब मैं आपसे कुछ प्रश्न पूछूँगी। प्रश्न सुनकर आप अपनी ऑडियो को तीन मिनट के लिए विराम देंगे एवं उस समय में आप पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखेंगे। प्रश्न इस प्रकार से हैं :-

प्रश्न 1. आद्योपांत से क्या तात्पर्य है? किसने किसे आद्योपांत कथा सुनाई?

प्रश्न 2. सेठानी क्या आशाएँ लगाए बैठी थीं?

प्रश्न 3. कथा सुनकर सेठानी पर क्या प्रभाव पड़ा ?

बच्चो ! प्रश्नों के उत्तर लिखने के लिए दी गई तीन मिनट की अवधि अब समाप्त हो चुकी है। आशा करती हूँ कि आपने उपर्युक्त प्रश्नों के उत्तर लिख लिए होंगे। पूछे गए प्रश्नों के उत्तर इस प्रकार हैं :-

उत्तर 1. 'आद्योपांत' से तात्पर्य है - प्रारंभ से अन्त तक। सेठ ने सेठानी को कुंदनपुर के सेठ के पास जाने और उनसे तथा उनकी पत्नी से हुई वार्तालाप के बारे में बताया।

उत्तर 2. सेठानी को आशा थी कि धन्ना सेठ ने अवश्य ही सेठ जी का एक न एक यज्ञ अवश्य खरीद लिया होगा। इससे उनके पास धन आ जाएगा और उनके दिन फिर सुखपूर्वक कटने लगेंगे।

उत्तर 3. सेठ जी द्वारा सुनाई कथा को सुनकर सेठानी की सारी वेदना जाने कहाँ विलीन हो गई। उनका हृदय यह जानकर उल्लासित हो उठा कि विपत्ति में भी सेठ जी ने धर्म नहीं छोड़ा। धन्य हैं, मेरे पति। सेठानी ने सेठजी के चरणों की रंज माथे पर लगाते हुए कहा कि भगवान सब भला करेंगे।

बच्चो ! अब कहानी को आगे बढ़ाते हुए इसे भी विस्तार से समझने का प्रयास करते हैं।

संध्या के समय सेठ की पत्नी जब दीया - बत्ती जलाने उठी तो रास्ते में उसे किसी चीज़ से ठोकर लगी। वह गिरते - गिरते संभली। उसने दीया जलाकर नीचे की ओर देखा तो पाया कि दहलीज के सहारे लगे फ़र्श का एक पत्थर ऊँचा हो गया था, जिस पर लोहे का एक कुंदा लगा हुआ था। इसी कुंदे से ही सेठानी ने ठोकर खाई थी। शाम तक तो वहाँ का पत्थर बिलकुल उठा नहीं था, फिर अचानक वह पत्थर कैसे उठ गया। सेठानी ने सेठ को आवाज़ दी और कहा कि देखो तो यह पत्थर यहाँ कैसे उठ गया। पत्थर को देख सेठ - सेठानी अचरज में पड़ गए। दीए की रोशनी

ध्यानपूर्वक देखने पर पता लगा कि वह पत्थर नहीं, किसी चीज़ का ढकना है जिसके बीचों-बीच कुंदा लगा है। इसी कुंदे से सेठानी को ठोकर लगी थी। सेठ ने कुंदे को पकड़कर ढकने को उठाया तो वह उठ गया। सेठ ने देखा अन्दर जाने के लिए सीढ़ियाँ बनी थीं। सेठ और सेठानी दीया हाथ में लेकर नीचे उतरे। सीढ़ियाँ उतरते ही उन्होंने देखा कि वहा एक विशाल तहखाना था जो जवाहरातों से भरा था। दहलीज के नीचे हीरे-जवाहरात से भरा खज़ाना देखकर सेठ-सेठानी आश्चर्यचकित खड़े रहे। उन्हें ईश्वर की कृपा पर विश्वास नहीं हो रहा था। वे दोनों ईश्वर की माया को समझ नहीं पा रहे थे, तभी उन्हें दिव्य वाणी सुनाई पड़ी ओ सेठ! स्वयं भूखे रहकर, अपना कर्त्तव्य मानकर तुमने जो मरते हुए कुत्ते को अपनी चारो रोटियाँ खिलाकर उसकी जान बचाई, यह खज़ाना उसी महायज्ञ का पुरस्कार है। सेठ-सेठानी इस दिव्य वाणी को सुनकर कृतकृत्य (धन्य-धन्य) हो गए। इस दैवी लीला ने उनके हृदय को उल्लास से भर दिया। उन्होंने धरती पर माथा टेककर ईश्वर के चरणों में प्रणाम किया।

सेठ ने बहुत से यज्ञ किए और दान में न जाने कितना धन-दौलत दीन-दुखियों में बाँट दिया था। उनकी धर्मपरायणता का ही यह फल था कि उन्हें अपने तहखाने में दबी हुई दौलत अनायास ही मिल गई और वे गरीब से फिर धनी हो गए।

बच्चो! अब हमारी यह कहानी समाप्त हो चुकी है। आशा है कि आपने इसे रुचिपूर्ण ढंग से सुना एवं समझा होगा। इस कहानी को आप दो-तीन बार अवश्य पढ़ेंगे एवं समझने का भी प्रयास करेंगे। अब मैं आपको गृहकार्य देने जा रही हूँ, जिन्हें आप सभी अपनी-अपनी साहित्य की उत्तर-पुस्तिका में लिखेंगे।

गृहकार्य

सभी छात्र इस पाठ को ध्यानपूर्वक पढ़ेंगे एवं अवतरण पर आधारित प्रश्नोत्तर को पढ़कर अपने शब्दों में लिखने का प्रयास करेंगे।

धन्यवाद।

[अंतिम पृष्ठ]